डॉ० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, रहमताई महिला महाविद्यालय
जहानाबाद, ग्रामीण समाजशास्त्र, पत्र सं०- II,
बी०ए० (H), खण्ड - III

प्रभु जाति (Dominant Caste) की अवधारणा को स्पष्ट करें — भारतीय गांवों में संगठन का प्रमुख आधार जाति-प्रथा है। 1959 में प्रो० श्रीनिवास ने मैसूर के रामपुर गांव के अध्ययन के दौरान 'प्रभु जाति' की अवधारणा को जन्म दिया। उस अवधारणा का प्रयोग विभिन्न विद्वानों ने अपने अध्ययनों में किया है और इसके सहारे उन्हें गांव में राजनैतिक संगठन, अंतर्जातीय संघर्ष एवं प्रभुत्व को समझने में योग मिला है।

प्रभु जाति को परिभाषित करते हुए डॉ० एम० एन० श्रीनिवास लिखते हैं "एक जाति तब प्रभु कही जाती है जब वह संख्या के आधार पर गांव अथवा स्थानीय क्षेत्र में शक्तिशाली हो और प्रभावशाली आर्थिक व राजनैतिक शक्ति रखती हो। यह आवश्यक नहीं वह परम्परागत जाति पदक्रम सोपान में सर्वोच्च जाति की हो।" **प्रभु जाति की विशेषताएं** — (1) संख्यात्मक शक्ति (Numerical Strength) — प्रभु जाति का सर्वप्रमुख आधार

Page. N-02

उसकी संख्यात्मक शक्ति है। प्रभु जाति गांव में अथवा क्षेत्र में अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक संख्या में होती है। संख्या में अधिक होने से वह अन्य जातियों पर अपना प्रभुत्व रखती है। अल्पसंख्यक जातियों को उसकी शक्ति के सम्मुख झुकना होता है और कई बार तो प्रभु जाति उन पर अत्याचार भी करती है। अल्पसंख्यक जातियां ऐसी स्थिति में प्रभु जाति का विरोध भी करती है।

(2) आर्थिक व राजनैतिक प्रभुत्व (Economic and Political Dominance) — क्षेत्र अथवा गांव में प्रभु जाति आर्थिक एवं राजनैतिक शक्ति रखती है। उसके पास गांव की सर्वाधिक भूमि होती है, जिस पर अन्य जातियों के लोगों द्वारा काम करवाया जाता है। आर्थिक स्थिति राजनैतिक प्रभुत्व को भी जन्म देती है। चुनाव के समय प्रभु जाति अपने आश्रितों के मत प्राप्त करने में सफल होती है। गांव में प्रभु जातियां राज्य विधानसभा और लोकसभा के चुनावों में 'वोट बैंक' का कार्य करती है।

(3) जातीय संस्तरण की प्रणाली में उच्च सामाजिक स्थिति — (Higher Status in caste Hierarchy) — प्रभु जाति के लिए यह आवश्यक है कि वह जाति व्यवस्था में अपना ऊँचा स्थान रखती हो, कोई भी निम्न जाति नहीं पायी गयी है क्योंकि सामाजिक संस्तरण में जातियों की पवित्रता और अपवित्रता भी एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। कई बार एक निम्न जाति संख्या में अधिक होने अथवा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर भी गांव में प्रभु जाति का स्थान इसलिए नहीं पाती कि वह जाति संस्तरण में निम्न स्तर पर है।

(4) आधुनिक शिक्षा एवं नवीन व्यवसाय (Modern Education and New occupations) — गांव में प्रभु जाति अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक शिक्षित होती है। वह नवीन व्यवसायों एवं नौकरियों में लगी होती है। शिक्षित होने के कारण उसका सम्पर्क राजनीतिक अधिकारियों से होता है। इन सब बातों का अन्य जातियों पर प्रभाव पड़ता है और वे प्रभु जाति का दबदबा मानती हैं।

(5) सम्पूर्ण गांव की एकता, न्याय और कल्याण के लिए कार्य —

Page. No. 04

(Administration of Justice, unity and welfare for the Whole community) — प्रभु जाति गांव की एकता को बनाये रखने में योग देती है और ऐसे कार्य करती है जिससे सारे समुदाय की भलाई हो। यह सारे गांव में झगड़े निपटाने एवं न्याय का कार्य भी करती है। प्रभु जाति अन्य जातियों के नियमों का सम्मान करती है। अन्य जातियों के विवाद हल करने के लिए प्रभु जाति के बड़े-बूढ़े व्यक्तियों के पास लाये जाते हैं। प्रभु जाति निष्पक्ष और दयालु होती है। सांस्कृतिक उत्सवों एवं समारोहों में प्रभु जाति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आलोचना — एस० सी० दुबे ने प्रभु जाति की अवधारणा की आलोचना करते हुए कहा है कि यह आवश्यक नहीं कि संख्या की अधिकता के कारण कोई जाति प्रभु जाति बन जाए हो सकता है कि अधिक संख्या होने पर भी उस जाति के सदस्यों में एकता और जागरूकता का अभाव हो। इसके विपरीत संभव है कि कम संख्या वाली जाति में एकता, दृढ़ता एवं जागरूकता होने पर वह शक्तिशाली बन जाए। एस० सी० दुबे प्रभु जाति के स्थान पर प्रभुत्वशाली व्यक्ति का प्रयोग करते हैं।